DR.MALA KUMARI

ASSISTANT PROFESSOR (GUEST

TEACHER)

DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY

A.N.D COLLEGE SHAHPUR

PATORY,SAMASTIPUR

B.A –PART 2 PSYCHOLOGY (HONS)

PAPER-4 ,UNIT-7 ,

THE CONTRIBUTIONS OF MASLOW

LECTURE – 88

मैसलो का योगदान (CONTRIBUTIONS OF MASLOW)

इनका वर्णन निम्नलिखित है –

1. दैहिक आवश्यकता (PHYSIOLOGICAL NEED)–दैहिक आवश्यकता उन मौलिक आवश्यकताओं को कहा जाता है जिसमें भोजन ,जल ,आँक्सीजन ,तापक्रम ,यौन आदि की जरुरतें सम्मिलित होती है | ये आवश्यकताएँ सबसे अधिक महत्व की होती है | इन आवश्यकताओं की तुष्टि नही होती है ,तो कोई अन्य उच्चस्तरीय आवश्यकता की उत्पत्ति नही हो सकती है | उदाहरणस्वरूप ,अगर कोई व्यक्ति भूखा है तो उसमें कभी भी अपनी सुरक्षा तथा सम्मान की बात मन में नहीं आयेगी |
2. सुरक्षा आवश्यकता(SAFETY NEEDS) –सुरक्षा आवश्यकता में दैहिक सुरक्षा की आवश्यकता ,चिंता ,खतरा ,तथा अस्त -व्यस्त (CHAOS)

से मुक्ति आदि की आवश्यकता सम्मिलित होती है |मैसलो के अनुसार व्यक्ति में सुरक्षा आवश्यकता की उत्पत्ति तब होती है जब उसकी दैहिक आवश्यकताओं की तुष्टि हो जाती है |सुरक्षा आवश्यकता इस अर्थ में दैहिक आवश्यकता से भिन्न है कि सुरक्षा आवश्यकता की तुष्टि पुर्णतः सम्भव नहीं है | एक स्वस्थ व्यस्क के लिए सुरक्षा आवश्यकता बहुत उपयुक्त अभिप्रेरक (MOTIVATOR) नही होता है |परन्तु बच्चे के लिए सुरक्षा आवश्यकता प्रमुख अभिप्रेरक होते है | परन्तु आपातकालीन परिस्थिति जैसे –युद्ध ,दुर्घटना ,आगजनी आदि के दौरान सुरक्षा आवश्यकता मुख्य अभिप्रेरक के रूप में कार्य करते है |

3. स्नेह एवं सदस्यता की आवश्यकता (LOVE AND BELONGINGNESS NEED) जब व्यक्ति की दैहिक आवश्यकता एवं सुरक्षा की आवश्यकता की तुष्टि हो जाती है ,तो उनका व्यवहार स्नेह एवं सदस्यता (BELONGINGNESS) की आवश्यकता द्वरा तुष्टि होने लगता है |इस श्रेणी की आवश्यकता में दोस्ती की आवश्यकता ,समूह के सदस्यता की आवश्यकता ,अपने परिवार के व्यक्तियों को स्नेह देने की आवश्यकता आदि सम्मिलित होती है | एक साथी जैसी पत्नी या पति की आवश्यकता भी इसी श्रेणी की आवश्यकता है |मैसलो का मत है कि स्नेह आवश्यकता की तुष्टि के बिना बच्चे एवं व्यस्क के व्यक्तित्व का विकास सम्भव नही है | वैसे व्यस्क जिनकी इस आवश्यकता की तुष्टि नही हो पाती है ,उनका अंतर वैयक्तिक सम्बन्ध (INTERPERSONAL RELATIONSHIP) दोषदर्शी (CYNCICAL) तथा आत्म –पराजित (SELF -DEFEATING) होता है |
4. सम्मान की आवश्यकता (ESTEEM NEED) जब उपर्युक्त तीनों तरह की आवश्यकता की पूर्ति हो जाती है , तो व्यक्ति में सम्मान की आवश्यकता की उत्पति होती है | इन आवश्यकताओं में आवश्यकता के दो सेट (SET) होते है – पहले सेट में शक्ति की आवश्यकता (NEED

FOR STRENGTH)आत्म –विश्वास ,स्वतन्त्रता ,सामर्थ्यता (CONPETENCE) की आवश्यकता आदि सम्मिलित होते है | दुसरे सेट में प्रतिष्टा ,प्रभुत्व ,प्रशंसा ,लोकप्रियता पाने आदि की आवश्यकता सम्मिलित होती है | सचमुच में यह दुसरे श्रेणी की आवश्यकता की उत्पत्ति पहले सेट की आवश्यकता से होती है | मैसलो (MASLOW ,1970) ने यह भी बतलाया है कि आत्मसम्मान की आवश्यकता की तुष्टि होने से व्यक्ति में आत्म –विश्वास ,शक्ति ,योग्यता (WORTH) आदि की भावना उत्पन्न होती है और यदि इस आवश्यकता की तुष्टि किसी कारण से नही होती है तो इससे व्यक्ति में हीनता या कमजोर होने आदि का भाव उत्पन्न होता है | मैसलो के सम्मान आवश्यकता को अल्फ्रेड एडलर के संप्रत्यय श्रेष्ठता की प्रयास (STRIVING FOR SUPERIORITY) तथा इरिक इरिकसन के संप्रत्यय प्रवीणता की आवश्यकता के तुल्य माना गया है |

TO BE CONTINUE